द्रोणगिरी विधान
(विश्व शान्ति विधान)

रचयिता

सारस्वत कवि

आचार्य विभवसागर

द्रोणगिरी विधान

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने के लिये जब बहिरंग एवं अन्तरंग निमित्त युगपद् प्राप्त हो जाये तो, द्रोणागिर जैसे सातिशय सिद्धक्षेत्र पर किसी भी पूजा या विधान का निर्माण, किसी भी सहित्य या कविता प्रेमी को प्रेरित कर जाता है, और ऐसा ही कुछ मेरे साथ हुआ, तथा मैने भी ब्र. श्री शीलचन्द्र जी जैन 'बीना' वालों से तीर्थराज सम्मेद शिखर की पावन रज पाकर–मुझे विचार आया कि

श्रावक के पास जो है वह श्रावक अर्पित कर रहा है। तो मेरे पास जो कुछ है वह मुझे समर्पण करना चाहिये। उसी क्षण अन्तस चेतना जागृत हो उठी, संकल्प भाव जागे लेखनी मचल उठी प्रभु गुण गाने। शरद पूर्णिमा से प्रारंभ हुआ कार्य दीपावली के शुभ दिन, अर्थात् पन्द्रह दिवस में यह भक्ति प्रधान विधान रचकर तैयार हुआ। वर्षायोग के समापन पर यह आस्था का जीवन्त अर्घ्यं समर्पित कर जीवन धन्य हो गया।

विषय परिचय– इस द्रोणगिरि विधान के शुभारम्भ में सर्वप्रथम मंगलाचरण रूप में जिनेन्द्र संस्तुतु, क्रमशः तीर्थ प्रस्तावना, सिद्ध वंदना, द्रोणगिरि पूजा, जयमाला के अनंतर, प्रथम वलय में 8 अर्थ अर्पित किये जो, गुरुदत्त स्वामी यहाँ से अष्ठकर्म मुक्त होकर अष्टगुण युक्त होकर मोक्ष पधारे, उनसे उन गुणों को पाने के लिये समर्पित किये।

द्वितीय वलय में 16 अर्घ्यं है, जो जिनालय एवं जिन प्रतिमा के चरणों के हैं।

तृतीय वलय में 24 अर्घ्यं हैं, जिनमें अतिंम दो अर्घ्यं से छपा ग्राम मंदिर के हैं।

चतुर्थ वलय में – 24 भगवान की चौबीसी मंदिर जो भारत वर्ष में इतना विस्तार युक्त व्यवस्थित प्रथम चौबीसी मंदिर होगा।

इस प्रकार इस विधान में 8+16+24+24 = 72 अर्घ्यं समर्पित है। अंत में महाअर्घ्यं, जयमाला, आरती पढ़ते ही विधान उद्यापन हो जाता है।

द्रोणगिरि विधान

तीर्थ प्रस्तावना

दोहा

विनय सहित उल्लासयुत, धरकर गुरु का ध्यान।
भक्ति भाव से मैं करूँ, 'द्रोणागिरि' विधान॥१॥

'द्रोणागिरि' शुभ नाम है, सिद्धक्षेत्र सुखधाम।
'लघु सम्मेद शिखर' यही, यही 'सेंधपा' ग्राम॥२॥

द्रव्यकर्म नोकर्म मल, हरता यह निष्काम।
सिद्धक्षेत्र के द्वार का, नाम 'मलहरा' ग्राम॥३॥

कण-कण में भगवान हैं, ऐसा अनुपम थान।
अतः निकट में ही बसा, सुन्दर भगवां ग्राम॥४॥

सेंध लगाते मोक्ष की, पा से पालें धर्म।
अतः सेंधपा सार्थ है, जयवंते जिनधर्म॥५॥

आदिनाथ भगवान का, जिन मंदिर अभिराम।
अतिशीतल अति शान्तमय, प्रतिमाओं का धाम॥६॥

भारत भू के मध्य में, उत्तम मध्यप्रदेश।
जिला छतरपुर में बसा, द्रोणागिरि विशेष॥७॥

महामुनि गुरूदत्त जी, ने पाया निर्वाण।
उसी धरा पर मैं रचूँ, द्रोणागिरि विधान॥८॥

सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि पूजा

आह्वानन

सिद्धालय का गर्भालय यह, सिद्धक्षेत्र प्यारा।
औषधियों का नंदनवन यह, हिमगिरि से न्यारा॥
पूरब पश्चिम दो नदियों में, बहती जलधारा।
द्रोणगिरि यह भक्त जनों की, आंखों का तारा॥1॥
आह्वानन संस्थापन करता, सन्निधि करता हूँ।
गुरुदत्तादि मुनीश्वरों की, पूजन करता हूँ॥
ऐसे लघु सम्मेदशिखर का, दर्श दुबारा हो।
सिद्धक्षेत्र श्री द्रोणगिरि को, नमन हमारा हो॥2॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभयो अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

निर्मल सम्यग्दर्शन जैसी, निर्मल जल धारा।
पद कमलों में करूँ समर्पित, कर कमलों द्वारा॥
ऐसे लघु सम्मेद शिखर का, दर्श दुबारा हो।
सिद्धक्षेत्र श्री द्रोणगिरि को, नमन हमारा हो॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन वंदन को ले आया, अभिनंदन करता।
चंदन सम शीतलता पाऊँ, भव आतप हरता॥
ऐसे लघु सम्मेद शिखर का, दर्श दुबारा हो।
सिद्धक्षेत्र श्री द्रोणगिरि को, नमन हमारा हो॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्योः संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत शुक्ल ध्यान को, जो दर्शाते हैं।
अक्षय पद पाने को अक्षत, चरण चढ़ाते हैं॥
ऐसे लघु सम्मेद शिखर का, दर्श दुबारा हो।
सिद्धक्षेत्र श्री द्रोणगिरि को, नमन हमारा हो॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सजी हुई सुमनावलियों से, यह पूजा थाली।
कामजयी! पद पुष्प चढ़ाकर, हुआ भाग्यशाली॥
ऐसे लघु सम्मेद शिखर का, दर्श दुबारा हो।
सिद्धक्षेत्र श्री द्रोणागिरि को, नमन हमारा हो॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो: कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

डुबो-डुबो मन भक्ति रस, नैवेद्य बनाता हूँ।
शुभ भावों का थाल सजाकर, चरण चढ़ाता हूँ॥
ऐसे लघु सम्मेद शिखर का, दर्श दुबारा हो।
सिद्धक्षेत्र श्री द्रोणगिरि को, नमन हमारा हो॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन दीप जलाकर, आरतियाँ करता।
मोह तिमिर को दूर भगाने, दीपक में धरता॥
ऐसे लघु सम्मेद शिखर का, दर्श दुबारा हो।
सिद्धक्षेत्र श्री द्रोणगिरि को, नमन हमारा हो॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टकर्म की धूप बनाकर, ध्यान हुताशन में।
जला रहा हूँ निज कर्मों को, इस जिनशासन में॥
ऐसे लघु सम्मेद शिखर का, दर्श दुबारा हो।
सिद्धक्षेत्र श्री द्रोणगिरि को, नमन हमारा हो॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नर भव का फल जिन पूजा है, जिन पूजा करता।
पूजा का फल मोक्षमहल है, पाने फल धरता॥
ऐसे लघु सम्मेद शिखर का, दर्श दुबारा हो।
सिद्धक्षेत्र श्री द्रोणगिरि को, नमन हमारा हो॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रोणगिरि के दर्शन पाकर, खुशहाली आयी।
ऐसा हमको लगा कि भगवन्! सिद्धशिला पायी॥
नन्दीश्वर नंदनवन जैसी, छटा निराली है।
रक्षाबन्धन पर्व दशहरा, या दीवाली है॥
इस पर्वत से सिद्धालय के, खुले द्वारे हैं।
गुरुदत्तादि महामुनीश्वर! मोक्ष पधारे हैं॥
ऐसे लघु सम्मेद शिखर का, दर्श दुबारा हो।
सिद्धक्षेत्र श्री द्रोणगिरि को, नमन हमारा हो॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तावि मुनीन्द्रेभ्यो अनर्घ्यं पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

द्रोण मेघ राजा हुये, धन्य द्रोणगिरि ग्राम।
'गुरुदत्त' के योग से, बना सिद्धि का धाम॥
'मुनिसुव्रत के काल में हुए' 'पद्म' 'श्रीराम'।
तब से जग में पूज्य है 'द्रोणागिरि' अविराम॥

ऊँचा पर्वत बता रहा है, उच्च विचारों को।
'गुरुदत्तादि' मुनीश्वरों के उच्चाचारों को॥
स्वागत करती वृक्ष लतायें, आने वालों का।
गौरव गाती ये सरितायें, जाने वालों का॥१॥

मन्दिर के शिखरों पर ध्वज भी, फर-फर फहरायें।
आओ आओ भव्यजनों तक, संदेशा लायें॥
'मधुबन' जैसा यहाँ नजारा, हर पल छाया है।
देखो लघु सम्मेद शिखर जी, यह कहलाया है॥२॥

अनेकान्त सी बहे 'श्यामरी' तापों को हरती।
स्याद्वाद सी 'काठन' बहती, देशाटन करती॥
कल कल करतीं चरण पखारें, दोनों सरितायें।
गंधोदक ले भाग्य सवारें, आगे मिल जायें॥३॥

'गिरारगिरि' के दर्शन करके, जो 'दर्शाण' आती
'देवरान' में रत्नत्रय सी, वह भी मिल जाती॥
मिलकर 'तीनों' मोक्षमार्ग का, पथ दिखलाती हैं
मानो सुखसागर पाने की, राह बताती हैं॥४॥

सुनलो प्यारे सिद्धक्षेत्र की, कथा सुहानी है।
आगम ग्रन्थ पुराणों में भी, यही कहानी है॥
महाश्रमण 'गुरूदत्त मुनीश्वर' 'हस्तिनपुरवासी'।
कर विहार पर्वत पर आये, शिवपद अभिलाषी॥5॥

गुफा मध्य जब ध्यान लीन थे, 'विप्र कपिल' आया।
रचे विविध उपसर्ग उसी ने, जो भी मन आया॥
रूई लपेटी मुनिके तन में, आग लगायी थी।
भेदज्ञान से मुनि के मन में, दृढ़ता आयी थी॥6॥

तभी आपके शुक्ल ध्यान की, जली शीघ्र ज्वाला।
कर्म जले कैवल्य ज्ञान का, फैला उजियाला॥
सुर-सुरेन्द्र वन्दन को आये, करते पूजायें।
प्रवचन सुनने गंधकुटी की, प्रकटी शोभायें॥7॥

सप्त तत्त्व छह द्रव्य बताये, नौ पदार्थ गाये।
जगद्गुरु 'गुरुदत्त' केवली, शिवपथ बतलाये॥
योग रोधकर शुक्ल ध्यान धर, चारों कर्म हनें।
'द्रोणगिरि' से मोक्षमहल पा, तुम निष्कर्ष बने॥8॥

अद्भुत महिमा अद्भुत अतिशय, भू मंगलकारी।
जगद्वन्द्य ये जगतपूज्य ये, त्रिभुवन उपकारी॥
इकतिस मन्दिर सात चरण युत, क्षेत्र निराला है।
'विमलसागर' के शुभाशीष का, यहाँ उजाला है॥9॥

बुन्देली के वरद देवता, वर्णीजी प्यारे।
'लघु सम्मेदशिखर जी' कहकर करते जयकारे॥
'महावीरकीर्ति' 'सन्मतिसागर' 'शान्तिसिन्धु' आये।
सिद्धक्षेत्र पर ध्यान लगाकर, परम शान्ति पाये॥10॥

'विद्यासागर' के करकमलों, दीक्षा यहाँ हुई।
पूज्य 'समयसागर' मुनिवर की, शिक्षा यहाँ हुई॥
चौबीसी की हुई प्रतिष्ठा, गजरथ फेरी थी।
तीर्थक्षेत्र के नव विकास में, अब क्या देरी थी॥11॥

गुरु विरागसागर जी ने भी, चातुर्मास किया।
सिद्धि प्रदाता सिद्धक्षेत्र ने, पद आचार्य दिया॥
उनके पावन कर कमलों से, दीक्षायें भी ली।
विश्वजीतमुनि विश्वकीर्तिमुनि, विशद सिन्धु की भी॥12॥

पंचकल्याण महोत्सव करके, फिर विहार कीना।
'देवनन्दी' ने चातुर्मास रच, नया रूप दीना॥
'सुपार्श्वमति' की हुई प्रेरणा, प्रतिमा अभिरामी।
पद्मासन में खड्गासन में 'गुरुदत्त' स्वामी॥13॥

पुण्य प्रतिष्ठा करके उनने, पुण्य कमाया है।
स्वर्ग लोक के देवों ने, आनन्द मनाया है॥
खोज रहा था 'विभव' स्वयं का विभव यहाँ पाया।
धन्य हुआ मैं द्रोणगिरि का, गुण वैभव गाया॥14॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

सिद्धक्षेत्र पूजा रची, द्रोणगिरि निष्काम।
गुरुदत्त जी दीजिए, हमको शिवसुख धाम॥
बुद्धिहीन गुणहीन हूँ, भक्ति लीन भगवान।
आत्म 'विभव' को दीजिए, कीजे क्षमा प्रदान॥

॥ इत्याशीर्वाद पुष्पांजलीं क्षिपेत्॥

विधान अर्घ्यावली

प्रथम वलय आठ अर्घ

(जोगीरासा छन्द)

ज्ञानावरणी कर्मोदय से, ढका ज्ञान मेरा।
नानाविध अज्ञानदशा ने, डाला है डेरा॥
ऐसे कर्म विनाशक प्रभु के, गुण अनंत गाऊँ।
अनंत ज्ञानी गुणधारी से, गुण अनंत पाऊँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो अनंत ज्ञान गुण संयुक्त सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यंम निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी हमको, दर्श नहीं देता।
दर्शन करना चाहूँ प्रभुवर! दर्श नहीं होता॥
ऐसे कर्म विनाशक प्रभु के, गुण अनंत गाऊँ।
अनंत दर्शन गुणधारी से, गुण अनंत पाऊँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो अनंत दर्शन गुण संयुक्त सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्धं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म असाता भव दुख दाता, हमें रुलाता है।
जल थल नभ में कहीं न कोई, साता पाता है॥
ऐसे कर्म विनाशक प्रभु के, गुण अनंत गाऊँ।
अव्याबाधी गुणधारी से, गुण अनंत पाऊँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो सिद्ध परमेष्ठी अव्याबाधत्व गुण संयुक्त सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म मोहनी मोहित करके, हमें भुलाता है।
निज स्वरूप से भुला-भुला, पर मैं भरमाता है।
ऐसे कर्म विनाशक प्रभु के, गुण अनंत गाऊँ।
क्षायिक समकित धारी प्रभु से, गुण अनंत पाऊँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुवत्तावि मुनीन्द्रेभ्यो सिद्धपरमेष्ठी अनंत सुख संयुक्त सिद्धपव प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म का प्रबल बन्ध यह, भव बन्धन कर्ता।
नरक मनुज पशु देवायु युत, भव-भव में रखता॥
ऐसे कर्म विनाशक प्रभु के, गुण अनंत गाऊँ।
अवगाहन गुणधारी प्रभु से, गुण अनंत पाऊँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुवत्तावि मुनीन्द्रेभ्यो सिद्धपरमेष्ठी अवगाहनत्त्व गुण संयुक्त सिद्धपव प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रस-थावर सब पर्यायों की, संरचना करता।
नाम कर्म यह चउ गतियों में, जीवों को धरता॥
ऐसे कर्म विनाशक प्रभु के, गुण अनंत गाऊँ।
सूक्ष्मत्व गुणधारी प्रभु से, गुण अनंत पाऊँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुवत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो सिद्धपरमेष्ठी सूक्ष्मत्व गुण संयुक्त सिद्धपव प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म वश उभय कुलों में, जीव जन्म लेता।
सदाचार से शून्य फिरे वह, अपयश ही ढोता॥
ऐसे कर्म विनाशक प्रभु के, गुण अनंत गाऊँ।
अगुरुलघु गुणधारी प्रभु से, गुण अनंत पाऊँ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो सिद्धपरमेष्ठी अगुरुलघुत्व गुण संयुक्त सिद्धपव प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

अंतराय कर्मोदय कारण, लाभ नहीं पाता।
मनोकामना रहे अधूरी, पल–पल पछताता॥
ऐसे कर्म विनाशक प्रभु के, गुण अनंत गाऊँ।
महावीर्य गुणधारी प्रभु से, गुण अनंत पाऊँ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो सिद्धपरमेष्ठी अनंत वीर्य गुण संयुक्त सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

अष्टकर्म को नाश कर, पाया पद निर्वाण।
सिद्धचक्र पद मैं नमूँ, बनूँ सिद्ध भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो सिद्धपरमेष्ठी अनंत ज्ञानादि अष्ट गुण संयुक्त सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम भू पर शोभते, अष्ट गुणों के धाम।
प्रथम वलय पर पूजकर, नमूँ सिद्ध भगवान॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

द्वितीय वलय अर्घ

(जोगीरासा छन्द)

मंदिर क्रमांक-1 (सुपार्श्वनाथ भगवान)

जब जब देखूँ तुमको देखूँ, आंखें जब खोलूँ।
जब जब बोलूँ जय जय बोलूँ, जब भी मुँह खोलूँ॥
आंखों में हो छवि आपकी, मन में ध्यान रहे।
प्रभु! आपका भक्तजनों पर, यह वरदान रहे॥
शुभ्र कान्तिमय, शुक्ल ध्यानमय शान्तिरूप तेरा।
दर्शन पाकर आज आपके, जगा भाग्य मेरा॥
अहो, सुपारसनाथ जिनेश्वर, भव का पार्श्व मिले।
अर्घ चढ़ाकर करूँ वन्दना, मुक्ति द्वार खुले॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र स्थित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-2 (चन्द्रप्रभु भगवान)

चन्द्रप्रभ चन्दन सम शीतल, चन्द्रप्रभा धारी।
चन्द्रक्रान्ति सम चारू चरण हैं, त्रय जग उपकारी॥
चन्द्रप्रभ जी मोक्ष गये सम्मेद शिखर जी से।
चन्द्रप्रभ को अर्घ चढ़ाता, लघु शिखर जी से॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशयकारी मूलनायक

मंदिर क्रमांक-3 (पार्श्वनाथ भगवान)

सहसफणी प्रभु आप कहाते, पार्श्वनाथ स्वामी।
अतिशयकारी आप कहाते, पार्श्‍वनाथ स्वामी॥
चमत्कार जग में प्रकटाते, पार्श्वनाथ स्वामी।
सब जीवों के कष्ट मिटाते, पार्श्वनाथ स्वामी॥
विपदायें सब हरने वाले, पार्श्वनाथ स्वामी।
मन वांछित फल देने वाले, पार्श्वनाथ स्वामी॥
द्रोणगिरि पर दर्शन पाऊँ, पार्श्वनाथ स्वामी।
परिक्रमा दे अर्घ चढ़ाऊँ, पार्श्वनाथ स्वामी॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-4 (आदिनाथ भगवान)

वीतराग मुद्रा में सोहें, आदिनाथ स्वामी।
भक्त जनों के मन को मोहें, आदिनाथ स्वामी॥
भक्ति भाव से दर्शन करके, शीष झुकाता हूँ।
सिद्ध क्षेत्र श्री द्रोणगिरि पर, अर्घ्य चढ़ाता हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-5/1 (गुरुदत्तादि स्वामी)
(खड्गासन प्रतिमा)

गुरुदत्तादि मुनीश्वरों की, जयकारा बोलूँ।
द्रोणागिरि पर दर्शन पाकर, स्वयं धन्य होलूँ॥

द्रव्य तीर्थ तुम, क्षेत्र तीर्थ यह, काल तीर्थ आया।
भाव तीर्थ सिद्धत्व दशा को, तुमने प्रकटाया॥
पुण्य तीर्थ पर पुण्य पुरुष ही, दर्शन को आते।
भक्ति भाव से करें वन्दना, महापुण्य पाते॥
सिद्ध क्षेत्र पर अर्घ चढ़ाकर, सिद्ध शिला पाऊँ।
द्रोणगिरि से घर न जाकर, सिद्धालय जाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री गुरुदत्त स्वामिने अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक–5/2

मूंगा वर्णी प्रतिमा प्यारी, अजितनाथ स्वामी।
विजयासेना माँ के आंचल, खेले शिवगामी॥
जितशत्रु के अजेयसुत ने, कर्मों को जीता।
द्रोणगिरि पर अर्घ्य चढ़ाऊँ, पथ अजेय नेता॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक–6 (वृषभनाथ भगवान)

वृषभनाथ का चिन्ह वृषभ है, वृषभ हमें प्यारा।
वृषभेश्वर ने वृषभ बताया, वृषभ पन्थ न्यारा॥
आदि विधाता आदि प्रभो, आ–दिम तीर्थंकर हो।
द्रोणगिरि पर अर्घ चढ़ाऊँ, जगक्षेमंकर हो॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-7 (पांच भगवान)

चन्द्रप्रभ चन्दा से सोहे, पारस पाप हरें।
और सुपारस नाथ हमारे, भव सन्ताप टरें॥
दो-दो पारसनाथ प्रभु के, दर्शन यहाँ करें।
आदिनाथ को अर्घ चढ़ाकर, निर्मल भाव भरें॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री चंद्रप्रभ, पार्श्वनाथ, सुपार्श्वनाथ, पार्श्वनाथ, आदिनाथ पञ्च जिनेन्द्रभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-8 (चन्द्रप्रभु टोंक चरण)

चिड़िया चहके कोयल कुहुके, जय जय जय बोले।
चन्दा प्रभु के चरण चिन्ह पर, तरुवर नत होले॥
सूर्योदय की पहली किरणें, चरणों नमन करें।
मानो प्रभु से आज्ञा लेकर, आगे गमन करें॥
चन्दाप्रभु की टोंक निराली, महिमाशाली है।
दर्शन करके दर्शक मन में, यहाँ दिवाली है॥
चन्दा प्रभु की भक्ति करते, कोयल सा कुंजूं।
पद चिन्हों पर चलने हेतु, चरण चिन्ह पूजूं॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-9 (चन्द्रप्रभ भगवान)

अष्टम तीर्थंकर को पूजूं, अष्ट द्रव्य लेके।
आठों गुण निज में प्रकटाऊँ, प्रभु तुम सा होके॥
नमन करूँ मैं चन्दा प्रभु को, शीष झुकाकर के।
चन्दा प्रभु के चारू चरण में, अर्घ चढ़ाकर के॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-10 (आचार्य शान्तिसागर चरण)

शान्तिसागर शान्तिसागर, शान्तिसागर जी।
दर्शन करके जय जय बोले, शान्तिसागर की॥
द्रोणागिरि वन्दन को आये, शान्तिसागर जी।
पर्वत ऊपर ध्यान लगाये, शान्तिसागर जी॥
सिंहराज सम्मुख आ बैठा, शान्तिसागर के।
दर्शन करके चला गया वह, शान्तिसागर के॥
यहाँ भक्तगण दर्शन करते, शान्तिसागर के।
चरण चिन्ह दो यहाँ पूजते, शान्तिसागर के॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री आचार्य शान्तिसागर मुनिराज चरण कमलेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-11 (आचार्य वीरसागर चरण)

तीर्थंकर के दीक्षा वन सा, यहाँ का उपवन है।
तन मन पावन करने वाला, कण कण पावन है॥
धर्म धरा पर धर्मामृत का, बरसा सावन है।
वीर सिन्धु के चरण कमल में, शत शत वन्दन है।

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री आचार्य वीरसागर मुनिराज चरणकमलेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-12 (आचार्य शिवसागर चरण)

शान्तिसिन्धु आचार्य प्रवर की, परम्परा पाली।
शिव सागर ने शिव मारग की, राह दिखा डालीअर्घ्यम्
हमको भी शिव राह दिखाओ, शिव सागर मेरे।
अर्घ चढ़ाकर पूज रहा हूँ, चरण कमल तेरे॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री आचार्य शिवसागर मुनिराज चरणकमलेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-13 (शीतलनाथ भगवान)

छोटी मढ़िया कितनी बढ़िया, शीतलता देती।
वर्ष पांच सौ प्राची प्रतिमा, तन मन हर लेती॥
हमसे पहले सूरज आकर, वन्दन कर लेता।
चन्दा आकर करे आरती, पद रज ले लेता॥
मानो सूरज दर्शन पाकर, शीतल होता है।
अथवा चन्दा शीतल हो, शीतलता देता है॥
इसीलिये मैं भक्तिभाव से, जिनवर शीतल को।
अर्घ चढ़ाकर पूज रहा हूँ, द्रोण महीतल को॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य विमलसागर (चरण छतरी)

विमलसागर के शुभाशीष का, यहाँ उजाला है।
इनके दर्शन जिनने पाये, किस्मत वाला है॥
विमलसागर की जय जय बोलो, नतमस्तक होलो।
चरण चिन्ह पर अर्घ चढ़ाकर, जयकारा बोलो॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री विमलसागर मुनिराज चरणकमलेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-14 (रसोइन बाई की मढिया)

यात्री जन को बना रसोई, जो भोजन देती।
वह माता ही इस मढ़िया का, पूर्ण दान देती॥
धन्य रसोइन माता तुमको, दान भावना को।
यह सुन्दर मंदिर बनवाया, आत्म साधना को॥
दान अमर हो नाम अमर हो, जग में अमर रहो।
ऐसा दानी इस धरती पर, हर इक घर में हो॥

अपने प्यारे पार्श्वनाथ को, हृदय बिठाता हूँ।
द्रोणगिरी पर्वत के ऊपर, अर्घ चढ़ाता हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-15 (आचार्य ज्ञानसागर चरण)

विद्यासागर के विद्या गुरु, श्रुत विद्यादायी।
उन्हीं ज्ञानसागर गुरुवर के, चरण नमों भाई॥
ज्ञान भूमि निर्वाण धरा पर, आत्म ज्ञान पाऊँ।
अर्घ चढ़ाकर ज्ञान गुरु के, गुण गौरव गाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री आचार्य श्री ज्ञानसागर मुनिराज चरणकमलेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-16/1 (गुरुदत्त निर्वाण गुफा)

दो पल ठहरो, दो पल बैठो, दो पल ही ध्याओ।
जो दुनियां में कहीं मिले न, वह सुख तुम पाओ॥
कितने पहले गुरुदत्त ने, शिवपद पाया है।
आज उसी निर्वाण धरा ने, भाग्य जगाया है॥
ध्यान गुफा, निर्वाण गुफा, गुरुदत्त गुफा जानो।
महामुनि गुरुदत्त प्रभु का, मोक्ष यहां मानो॥
महा भाग्य सौभाग्य मानकर, शीष झुकाता हूँ।
सिद्धक्षेत्र श्री द्रोणगिरी पर अर्घ्य चढ़ाता हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे निर्वाण प्राप्त गुरुदत्त मुनिराजेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-16/2 (संग्रहालय मंदिर)

द्रोणगिरि पर जब जब आओ, संग्रहालय जाओ।
प्राचीन प्रतिमायें भी लखकर, तन मन हर्षाओ॥
चौरस चित्र बने अति सुन्दर, मन भावन प्यारे।
गुरुदत्त, सुकुमाल, सुकौशल, के न्यारे न्यारे॥
इन चित्रों के दर्शन से ही, चरित्र मिलता है।
रत्नत्रय का कल्पतरु, जीवन में फलता है॥
महामुनि गुरुदत्त प्रभु के चरण चिन्ह प्यारे।
नमस्कार कर अर्घ चढ़ाऊँ, खुले मोक्ष द्वारे॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री गुरुदत्त मुनिराज चरण कमलेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-17 (भगवान पार्श्वनाथ)

पार्श्वनाथ भगवान हमारी, आँखों के तारे।
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा के प्यारे॥
श्री सम्मेद शिखर तीरथ से, शिव पद पाया है।
लघु सम्मेद शिखर तीरथ पर, अर्घ चढ़ाया है॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे निर्वाण प्राप्त गुरुदत्त मुनिराजेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-18 (नेमीनाथ भगवान)

नेमिनाथ भगवान हमारे, नियम धरम दाता।
जिनके दर्शन वन्दन करने, सारा जग आता॥
ऊर्जयन्त गिरनार शिखर से, शिव पद पाया है।
लघु सम्मेद शिखर तीरथ पर, अर्घ चढ़ाया है॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-19 (गन्धकुटी मंदिर चन्द्र प्रभ भगवान)

गन्धकुटी की शोभा न्यारी, चन्दा सी चमके।
चन्द्र प्रभ की प्यारी प्रतिमा, सूरज सी दमके॥
तीन लोक के नाथ विराजे, तीन कोट ऊपर।
चन्दा प्रभु की पूजा करता, द्रोणिगिरि भू-पर॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित गंधकुटी विराजमान श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-20 (मान स्तंभ दर्शन)

चन्देलों के मानस्तंभ की, कलाकृति न्यारी।
चारों दिश में प्रतिमाओं की, संख्या है भारी॥
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, में चौबीसी है।
कौन बताये मानथंभ की, महिमा कैसी है।
पद्मासन से खड्गासन से, शिव पद पाते हैं।
मानथंभ के चारों दर्शन, यह बतलाते हैं॥
क्षेत्रपाल पद्मावती देवी, चक्रेश्वरी देवी।
सरस्वती जी यहाँ बांटती, सरस्वती देवी॥
आकर्षण का केन्द्र बना यह, वर्ष हजारों से।
द्रोणगिरि का पर्वत गूंजे, जय जयकारों से॥
भक्ति भाव से अर्घ चढ़ाकर, दर्शन मैं करता।
मानथंभ का अर्घ चढ़ाकर, वन्दन मैं करता॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री मानस्तंभ स्थित चतुर्दिग् जिन प्रतिमाभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-21 (आदिनाथ भगवान)

छोटा मंदिर छोटी प्रतिमा, कीरत बहुत बड़ी।
आकर भक्तो दर्शन करलो, आई पुण्य घड़ी॥
आदिनाथ की पद्मासन में, प्रतिमा जी प्यारी।
द्रोणगिरि पर अर्घ चढ़ाऊँ, हो मंगलकारी॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-22 (पार्श्वनाथ भगवान)

प्यासी अँखियां तरस रही थी, दर्शन पाने को।
पारस प्रभु के दर्शन पाकर, अर्घ चढ़ाने को॥
द्रोणगिरि तीरथ पर आके, मैंने दर्श किया।
मुरझाया मन खिला सुमन सा, महकी मन बगिया॥
चिन्तामणि व कल्पवृक्ष सम, चरण कमल तेरे।
मनवांछित फल देने वाले, बसें हृदय मेरे॥
श्वास-श्वास धड़कन-धड़कन में, नाम तुम्हारा हो।
हे पारस भगवान आपका, सदा सहारा हो॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-23
(आदिनाथ भगवान छोटी खड्गासन प्रतिमा)

जन्मोत्सव कल्याण मनाने, सुर सुरेन्द्र आये।
ऐरावत हाथी पर लेके, मेरु पर जाये॥
एक हजार आठ कलशों से, अनुपम न्वहन करें।

ऐसे आदिनाथ प्रभु को, हम सब नमन करें॥
घेर लिया था प्रभु आपको, वृक्ष लताओं ने।
छह महीने तक रहे ध्यान तब, केश जटाओं ने॥
कायोत्सर्गी आदिनाथ की, जिन मुद्रा न्यारी।
द्रोणगिरि पर पूज रहा हूँ, प्रतिमा यह प्यारी।।

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-24/1 (पार्श्वनाथ भगवान)

महापुण्य की बेला आयी, दर्शन यहाँ मिला।
जिन दर्शन से सम्यग्दर्शन, हमको यहाँ मिला॥
द्रोणाचल पर अर्घ्य चढ़ाकर, पल-पल मैं ध्याऊँ।
पार्श्वनाथ की पूजा का फल, सिद्धालय पाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंदिर क्रमांक-24/2 (आदिनाथ भगवान)

सास-बहू वाले

सास बहू के मंदिर वाली, प्रतिमा जी प्यारी।
देवों को आनंद प्रदायी, महिमा है न्यारी॥
सास बहू की कीर्ति अमर हो, इतना प्रेम रहे।
अर्घ चढ़ाऊँ आदिनाथ को, मंगल क्षेम रहे॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित सास बहू जिनालयस्थ श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

वृषभादि वीरान्त को, नमन अनंतानंत।
सिद्ध क्षेत्र पर पूजकर, बनूँ सिद्ध भगवन्त॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे द्वितीय वलय मध्ये चतुर्विंशति जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिनालयों के दर्शकर, जागा मेरा भाग्य।
जनम जनम पाता रहूँ, प्रभुवर यह सौभाग्य॥

इति ॥ पुष्पांजलिंक्षिपेत् ॥

तृतीय वलय अर्घ

(जोगीरासा छन्द)

मंदिर क्रमांक–25 (आदिनाथ भगवान)

इस पर्वत पर पहली प्रतिमा, यही कहाती है।
पंचशतक वर्षों से अब तक, पूजी जाती है॥
शुभ ऊर्जा का दिव्य खजाना, यहाँ समाया है।
दर्शन करके ऐसा हमने, अनुभव पाया है॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

भवदुखहारी शिव सुख कारी, हे त्रिभुवन स्वामी।
जग उपकारी महिमा भारी, हे अन्तर्यामी॥
भू मण्डल के अलंकार हो, तीर्थंकर स्वामी।
द्रोणगिरि पर नमस्कार हो, आदीश्वर स्वामी॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-26 (आदिनाथ भगवान)

दशलक्षण उत्तम धर्मों को, जीवन में धारा।
सोलहकारण भावों द्वारा, आतम श्रृंगारा॥
तीर्थंकर पद पाया प्रभु ने, सर्वप्रथम स्वामी।
बन्धन ना हो वन्दन करता, अर्घ्यं चढ़ा स्वामी॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-27 (पार्श्वनाथ भगवान)

श्यामवरण में विघ्नहरण की, प्रतिमा अभिरामी।
मनहारी सुन्दर मंदिर में, पार्श्वनाथ स्वामी॥
अष्टद्रव्य से पूजा करता, अष्टम भूगामी।
द्रोणगिरि पर पार्श्वनाथ को, शिरसा प्रणमामि॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-28 (गुरुदत्त भगवान)

द्रोणगिरि के दर्शन पाकर, खुशहाली आयी।
हमको ऐसा लगा कि भगवन्!, सिद्धशिला पायी॥
नंदीश्वर नंदनवन जैसी, छटा निराली है।
रक्षाबंधन पर्व दशहरा, या दीवाली है॥
इस पर्वत से सिद्धालय के, खुले द्वारे हैं।
गुरुदत्तादि महामुनीश्वर, मोक्ष पधारे हैं॥
ऐसे लघु सम्मेद शिखर का, दर्श दुवारा हो।
सिद्ध क्षेत्र श्री द्रोणगिरि को, नमन हमारा हो॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री गुरुदत्त जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-29 (शान्तिनाथ भगवान)

शान्तिप्रभो हे शान्ति विधाता, विश्व शान्ति कर्त्ता।
हिरण चिन्ह से शोभ रहे हैं, विश्व विघ्न हर्त्ता॥
आत्म शान्ति को पाने हेतु, चरण नमूँ तेरे।
द्रोणगिरि पर अर्घ्य चढ़ाऊँ, शान्तिनाथ मेरे॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-30 (नेमिनाथ भगवान)

करुणाधारी पर उपकारी, दया पुजारी हे!
परम अहिंसा व्रत के धारी, मंगलकारी हे!!
सुनकर के पशुओं का क्रन्दन, अभय दान दाता।
नेमिनाथ के श्री चरणों में, झुका रहा माथा॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-31/1 (पार्श्वनाथ भगवान)

जल चन्दन अक्षत पुष्पों युत, दीप धूप लेके।
मिष्ट फलों से पूजा करता, अर्घ चढ़ाकर के॥
विघ्न विनाशक पुण्य प्रकाशक, सुख सम्पद दाता।
द्रोणगिरि पर पार्श्वनाथ को, झुका रहा माथा॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक–31/2 (पार्श्वनाथ भगवान)

पार्श्वनाथ भगवान हमारे, हृदय कमल आओ।
लोहा मन कुन्दन सा करके, जिनपथ दरशाओ॥
पल–पल, क्षण–क्षण नाम जपूं मैं, गुण महिमा गाता।
द्रोणगिरि पर पार्श्वनाथ को, झुका रहा माथा॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक–32 (महावीर भगवान)

प्रमुदित मन मेंढ़क आया था, जिन की पूजन को।
पूज रहा मैं भक्ति भाव उन, महावीर जिन को॥
बिन पूजन के मेंढ़क को जब, स्वर्ग दिलाया है।
पूजा का सच्चा फल पाने, अर्घ्य चढ़ाया है॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक–33 (चन्द्रप्रभ भगवान)

सिद्ध शिला सा चिन्ह आपका, सिद्ध शिला कारी।
सिद्ध शिला पर आप विराजे, सिद्ध शिला प्यारी॥
हे सिद्धेश्वर! कुछ न चाहूँ, बस इतना चाहूँ।
सन्त मिलन, अरिहन्त मिलन हो, सिद्ध मिलन पाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक–34 (नेमिनाथ भगवान)

नियम नियमफल दाता भगवान्! है तेरी वाणी।
भव सागर से पार उतारे, नौका जिनवाणी॥
नियम मोक्ष का साधन कहकर, शिवपथ को साधा।
हे नेमीश्वर दूर करो अब, मेरी भव बाधा॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक–35 (पार्श्वनाथ भगवान)

प्रभुवर तेरे नाम अनेकों, काम एक करना।
हम भक्तों को मोक्ष महल में, प्रभु आप धरना॥
बिन मांगे तरुवर पंथी को, ज्यों छाया दाता।
वैसे ही मैं पारस प्रभु को, झुका रहा माथा॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक–36 (पार्श्वनाथ भगवान)

सब प्रश्नों के उत्तर मिलते, जिनके दर्शन से।
जनम जनम के बंधन खुलते, जिनके वन्दन से॥
सदाचार जीवन में आता, जिनके अर्चन से।
जीवन सफल बनाया मैंने, पारस चरनन से॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-37 (पार्श्वनाथ भगवान)

पारस पारस बोलें हम सब, जय पारस बोलें।
कोटि कोटि कंठों में पारस, अमृत रस घोलें॥
नाम है पारस धाम बनारस, दोनों में रस है।
द्रोणगिरि के दर्शन पाना, जीवन का रस है॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-38 (चन्द्रप्रभ भगवान)

धन्य-धन्य हम धन्य हुए हैं, दर्शन पाकर के।
नर भव सफल बनाया हमने, द्रोणागिरि आके॥
चन्द्रप्रभ जी कुछ ना चाहूँ, बस इतना चाहूँ।
जनम जनम में द्रोणगिरि के, दर्शन मैं पाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-39 (सेंधपा ग्राम मंदिर)

आदिनाथ भगवान हमारी, आँखों के तारे।
शान्तिनाथ जी यहां विराजे, प्राणों से प्यारे॥
ग्राम सेंधपा के मंदिर को, अर्घ चढ़ाता हूँ।
केवल ज्ञानमयी भूमि को, शीष झुकाता हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर क्रमांक-40 (उदासीन आश्रम मंदिर)

उदासीनता जगा रहे जो, भव तन भोगों से।
इसीलिए मैं पूजा करता, शुभ उपयोगों से॥
उदासीन आश्रम के भगवन्, उदासीनता दो।
महावीर पद अर्घ चढ़ाऊँ, निजाधीनता दो॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रे स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (गीता छन्द)

अरिहंत वाणी का पठन, अरिहंत की आराधना।
सिद्धपथ का लक्ष्य निश्चल, सिद्ध गुण आराधना॥
आचार्य से आचार पाकर, स्वयं ही आचारना।
पाठक गुरु से पाठ पढ़ना, साधु से गुण धारना॥1॥

जिनधर्म की उज्जवल पताका, दिग-दिगन्तों में सभी।
फहरी सदा, फहरे सदा, निधर्म मय हा जग सभी॥
तीर्थंकरों की देशना, तत्त्वार्थ जिन आगम कहीं।
जो मोक्ष मार्ग प्रकाशती, वह वंद्य माँ जिन भारती॥2॥

जो चित्त को पावन करें वह, चैत्य जग में पूज्यतम।
जिनचैत्य से जो शोभता, वह चैत्य आलय उत्तमम्॥
नव देवताओं को नमन कर, अर्घ अर्पित मैं करूँ।
नवलब्धियों की प्राप्ति हो, जीवन समर्पित मैं करूँ॥3॥

(दोहा)

अष्ट कर्म को नाश कर, पाया पद निर्वाण।
सिद्धचक्र पद मैं नमूँ, बनूँ सिद्ध भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रेभ्यो सिद्धपरमेष्ठी अनंत वीर्य गुण संयुक्त सिद्धपद प्राप्तेभ्यो सिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थ वन्दना कर प्रभो! धन्य हुई नरकाय।
पुनः पुनः दर्शन मिलें, द्रोणागिरि पर आय॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

चतुर्थ वलय अर्घ

(24 तीर्थंकर अर्ध)

आदिनाथ भगवान (1)

हे आदिनाथ! तेरी प्रतिमा, मेरी श्रद्धा को जगा रही।
यह शिवपथ की संदेशक बन, नित मोक्ष मार्ग में लगा रही॥
यह वीतरागता परिचायक, ज्ञायक स्वभाव दर्शाती है।
अरु बाल मोहिनी छवि प्यारी, भक्तों का मन हरषाती है॥
दर्शन करते ही, हे प्रभुवर! नयनों में आप समा जाते।
तब भक्त नयन प्रेमाश्रु से, नयनों में तुमको नहलाते॥
निजशीष बिठा प्रक्षाल करें, फिर हृदय कमल पर पधराते।
तन रोम-रोम रोमांचित हो, नचते-गाते पद शिर नाते॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ भगवान (2)

हो कर्म विजेता प्रभुवर तुम, यह 'अजित' नाम सुखदायी है।
पहले मन इन्द्रिय पर जय पा, कर्मों की फौज भगायी है॥
तुम हो अजेय तुम हो विजेय, तुम श्रेय प्रेय आनंदमयी।
मैं अजितनाथ पूजा करता, तुम ध्येय ज्ञेय निर्द्वन्द्वमयी॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

संभवनाथ भगवान – (3)

शंभव! जिनवर का दर्शन ही, कर्मों का उपशम करता है।
भावों की प्रबल विशुद्धि से, क्षय और क्षयोपशम करता है॥
संभव कर दें भव-भव संभव, संभाव भरें संवर पथ दें।
अरु मोक्ष महल तक ले जाने, मम बनें सारथी शिवरथ दें॥
ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन भगवान – (4)

मधुवन में कपि करें वंदन, अभिनन्दन का अभिनन्दन कर।
निजमन से भक्त करें वंदन, अभिनन्दन का पद वन्दन कर॥
प्रमुदित मन हो, मुकुलित कर हो, वा-नर वन्दन करता कहता।
ऐसे अभिनन्दन का वंदन, जग का क्रन्दन हरता रहता॥
ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ भगवान – (5)

हे सुमति प्रभो! दो सुमति हमें, दुर्मति दुर्गति को दूर करो।
मैं सुमति कहूँ, मैं सुमति रहूँ, मैं सुयति रहूँ मन सुमति भरो॥
हे समिति पन्थ के निर्माता, हे समिति सन्त! मन समिति वरो।
हेसुमतिनाथ! नम सुमतिमाथ, दो सुमति साथ मम सुगति करो॥
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभ भगवान – (6)

श्रीपद्मप्रभो! के पादपद्म, यह भक्तभ्रमर मन मँडराया।
आनंद कन्द, मकरन्द पिया, निज चिदानंद पा हरषाया॥
हर्षित होकर मन नाच उठा, जिन गुण गुन–गुन गुंजन गाता।
मानो प्रभुवर के चरणों में, वह पूजक बन पूजा गाता॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुपार्श्वनाथ भगवान – (7)

प्रभुवर सुपार्श्व! दो पार्श्व हमें, हम डूब रहे भव सागर में।
दे करके नाथ सहारा तुम, पहुँचा दो प्रभु शिव सागर में॥
मैं तेरा नाम जपूँ प्रभुवर, तुम पर ही एक भरोसा है।
हे नाथ आपके हाथों में, मेरे जीवन की नौका है॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रप्रभ भगवान (8)

श्री चन्द्रप्रभो का ज्ञान विशद, सम्पूर्ण कलाओं वाला है।
ज्यों शरद् पूर्णिमा का चंदा, करता जग में उजियाला है॥
नभ चन्दा तो घटता बढ़ता, पर चन्द्रप्रभो न घटते हैं।
अतएव भक्त दिन रैन सदा, जय चन्द्रप्रभो को रटते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदन्त भगवान – (9)

प्रथमानुयोग करणानुयोग, चरणानुयोग द्रव्यानुयोग।
ये जिन शासन के चार चरण, इक बिन हो जाते अनुपयोग॥
ज्यों चार चक्र से रथ चलता, इक चक्र बिना रुक जाता है।
त्यों ही चारों अनुयोग मिले, तब पुष्पदन्त पथ पाता है॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलनाथ भगवान – (10)

जिन शीतल! हो सब शीलमयी, पर शीतल होकर पावक हो।
चउकर्म घातिया घातक हो, परघातक नहीं अघातक हो॥
अष्टादश दोष विनष्ट किये, परनाशक नहीं विकाशक हो।
हम भूले भटके भविकों को, शीतल सन्मार्ग प्रकाशक हो॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांसनाथ भगवान (11)

व्यवहार और निश्चय दोनों, नय साधन साध्य कहाते हैं।
ज्यों तरु में पहले फूल खिलें, पीछे निश्चय फल आते हैं॥
यह तत्त्व देशना जिनवर की, सर्वोदय मंगलकारी है।
सम्यक् श्रोता उपदेशक ही, श्रेयश पथ का अधिकारी है॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य भगवान – (12)

वसुधा पूजित श्री वासुपूज्य, वसुद्रव्य पूज्य हम पूजक हैं।
त्रयकाल पूज्य त्रय लोक पूज्य, त्रय योग पूज्य हम पूजत हैं॥
जब वसुधा पर अवतरित हुये, तब वसुधा हो गई रत्नमयी।
श्री वासुपूज्य की पूजन से, जीवन बनता त्रय रत्नमयी॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ भगवान – (13)

है विमलनाथ का ज्ञान विमल, यह विमल ज्ञान रत्नाकर सा।
मेरे गोपद सम ज्ञानों में, क्या तेरा ज्ञान समा सकता॥
फिर भी संस्तुतियाँ कर करके, धो लूंगा स्वयं कर्म दल मल।
तन विमल बने मन विमल बने, वाणी जीवन हो विमल विमल॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतनाथ भगवान – (14)

दुख किसे मिला? वह जीव तत्त्व, किससे मिलता वह? पुद्गल है।
दुख का कारण क्या? आस्रव है, दुख कैसे बँधता? बन्धन है॥
दुख को कैसे रोका जाये? वह संवर तत्त्व कहाता है।
वह दुख भी दूर करूँ कैसे? वह हेतु निर्जरा गाता है॥
दुख मुक्त अवस्था कैसी है? वह मोक्ष तत्त्व कहलाता है।
इस अनेकान्त जिनवाणी का, जिनवर अनंत से नाता है॥
श्रद्धान ज्ञान तप चर्या से, वह मोक्ष तत्त्व मिल जाता है।
जिनवर अनंत का यह पथ ही, हमको अनंत सुख दाता है॥

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ भगवान – (15)

हम बनें धर्म के अनुयायी, जिन धर्म सदा सुखदायी है।
जिनधर्म और जिनदेव बिना, बहु कष्ट सहा दुखदायी है॥
जिनधर्म सदा जयवन्त रहे, जिन धर्म! तरण–तारण त्रिभुवन।
हो कर्म शमन शिवपन्थ गमन, जिन धर्म नमन! जिन धर्म नमन॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिनाथ भगवान (16)

आहार बहोरीबन्द प्रभो, खजुराहो के हे शान्ति प्रभो।
थूवोन चन्देरी वानपुरम्, कारीटोरन के शान्ति प्रभो॥
जय रामटेक जय नेमगिरि, जय मुक्तागिर के शान्ति प्रभो।
स्वीकारो मेरा नमन प्रभो! हे सिद्धालय के शान्ति प्रभो।
चक्रेश प्रभो! तीर्थेश प्रभो, रूपेश प्रभो! दिवि अवतारी।
हे शान्ति विधायक शान्ति प्रभो! हे शान्ति मूर्ति करुणाधारी॥

हे दुखहारी हे सुखकारी, कर दो सब मेरे दोष शमन।
मैं अर्घ्यं चढ़ाता शान्ति प्रभो, हो विश्व शान्ति के लिए नमन।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थुनाथ भगवान – (17)

प्रशम भाव का उत्पादन, प्रथमानुयोग से होता है।
संवेग भाव का संवर्द्धन, करणानुोग से होता है॥
अनुकम्पा गुण का संरक्षण, चरणानुयोग से होता है।
आस्तिक्य भाव निज में धारण, द्रव्यानुयोग से होता है॥
अनुयोग सभी उपयोग मयी, शुभ शुद्ध भाव के हैं कारण।
ऐसे अनुयोग प्रदाता की, पदरज करता मस्तक धारण॥
दे हितकारी संदेश विभो, जग को सन्मार्ग दिखाया है।
श्री कुन्थुनाथ प्रभु के चरणों, हमने यह अर्घ्यं चढ़ाया है।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अरनाथ भगवान (18)

पहले सम्यक् की नींव भरो, फिर ज्ञान भित्ति ऊँची करना।
शुभ ज्ञानमयी दीवारों पर, चारित की छत निर्मित करना॥
यह मोक्ष महल के शिल्पकार, श्री अरहनाथ ने बतलाया।
क्रमशः जिसने पथ अपनाया, उसने ही मोक्ष महल पाया॥
ॐ ह्रीं श्री अरनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ भगवान – (19)

जो दर्शनार्थ जाना चाहे, पर भीड़ राह अवरोधक हो।
आवाज लगाते तब जाते, वह शब्द बने पथ शोधक हो॥

त्यों मोक्षमार्ग की राहों में, कर्मोदय बनता बाधक है।
तो पूजा रोज रचाता जा, जिन पूजा शिव पथ साधक है॥
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत भगवान – (20)

व्रत देव लोक में ले जाता, अव्रत नरकों में ले जाये।
जो जीव जहाँ जाना चाहे, वह वैसा ही पथ अपनाये।
अव्रती व्रतों को ग्रहण करे, औ व्रती व्रत में पारायण हों।
व्रत उपदेशक मुनि सुव्रत जी, मेरे शिव पथ में कारण हो॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नमिनाथ भगवान – (21)

रे बार बार दधि मंथन से, ज्यों उत्तम माखन मिलता है।
त्यों बार बार श्रुत मंथन से, निज आत्म तत्त्व फल फलता है॥
अतएव परम आवश्यक है, चिन्तन मंथन जिनवाणी का।
प्रभु नमिनाथ की यह वाणी, कल्याण करे हर प्राणी का॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ भगवान – (22)

हरिवंश तिलक हे नेमि प्रभु, भव्यों को आप दिवाकर हो।
हे जिन कुंजर! हे अजर!, अमर, लोकत्रय आप प्रभाकर हो॥
बलदेव नमें वसुदेव नमें, चरणों में तीनों लोक नमें।
श्री नेमीनाथ पूजन करते, जिनवर भक्ति में भक्त रमें॥

ऊर्जयन्त गिरि गिरिनार गिरि, श्री नेमि नाथ निर्वाण गिरि।
जयवन्त रही जयवन्त रहे, यह जिन शासन की प्राण गिरि॥
हम तीर्थ वन्दना करके यह, गिरिनारी सदा बचायेंगे।
इसकी रक्षा में तन मन धन, अर्पण कर अर्घ चढ़ायेंगे॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ भगवान – (23)

समता सुमेरु! क्षमता धारी, हे दया क्षमा के अलंकार।
हे महामना! हे महामुनि, हे धर्मतीर्थ के तीर्थंकार॥
वामानंदन! काटो बन्धन, जग का वन्दन स्वीकार करो।
हे पार्श्वनाथ! हे कृपानाथ, मुझको भवसागर पार करो॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर भगवान (24)

जय महावीर! शासन नायक क्षायिक ज्ञायक सुखदायक हो।
जय वर्द्धमान भगवान वीर, अतिवीर सुसन्मति लायक हो॥
तुम जिओ और जीने दो शुभ, सन्देशा जग में फैलाया।
धर्म अहिंसा परमो धर्मः यह विश्व शान्ति पथ दर्शाया॥
कुण्डलपुर का आंगन बोले, उन महावीर की जय जय जय।
विपुलाचल का कण कण बोले, उन महावीर की जय जय जय॥
पावापुर का सरवर बोले, उन महावीर की जय जय जय।
सम्पूर्ण विश्व मिलकर बोले, उन महावीर की जय जय जय॥
ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

आदिनाथ से आदिकर, महावीर पद अन्त।
पूर्ण अर्घ ले पूजता, चौबीसों भगवन्त॥
यह तीर्थंकर संस्तुति, करके शुभ गुणगान।
रत्नत्रय को पाल कर, भक्त बने भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिंमहावीरपर्यंत चतुर्विंशति जिनेन्द्रभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

गुरुदत्त भगवान को, नत हो बारम्बार।
द्रोणगिरि विधान की, जयमाला हितकार॥

त्रोटक छन्द

जय द्रोणगिरि गुरुदत्त नमों, जय सिद्ध प्रभो! गुरुदत्त नमों।
गुरुदत्त नमों, गुरुदत्त नमों, यह क्षेत्र नमों, शिवधाम नमों॥

वन नंदन सी उपमा धरता, नित धर्म सुधा वरषा करता।
इस नंदन में सब औषध हो, नर वेसुध आकर भी सुध हो॥

सरिता बहती नित काठन है, इक और नदी जल बॉटन है।
वर ग्राम यहाँ फल होड़ रहा, अब भी महिमा पुरजोर रहा॥

दिश पूरव पश्चिम उत्तर से, अरु दक्षिण दिशा अनुत्तर से।
सब भक्त यहाँ पर आकर के, गुरुदत्त मुनी गुण गाकर के॥

यह जीवन पुण्यमयी करते, अरु द्रोणगिरी गुण से भरते।
नभ चूम रहे जिन मंदिर हैं, शिखरों कलशों से सुंदर हैं॥

फहराय रही पंचरंग पता, दरशाय रही शिव पंथ पता।
जब पुण्य जगे तब तीरथ हो, फिर पाप घटे अरु कीरत हो॥

जग में रहके अब क्या करना, जिन पूजन ही करना-करना।
जग में रहके अब क्या करना, जिन दर्शन ही करना-करना॥

जिन दर्शन वन्दन पा करके, जिन पूजन रोज रचा करके।
शुभ भाव जगे दुख दूर भगे, सुख शांति मिले मन फूल खिले॥

सब रोग मिटें सब पाप घटें, शुभ योग सदा घर में प्रकटें।
रज चंदन सी सुखदायक है, अघ नाशक है गुण दायक है॥

इसकी महिमा जग में वरणी, दिन रैन रहा करते 'वर्णी'।
जय पारस नाम सदा जपिए, इसकी महिमा मनसे भजिए॥

मनवांछित कारज पूर्ण करें, वसु कर्म सभी चकचूर्ण करें।
जय टोंक नमूँ प्रथमेश्वर की, पहले प्रभु आदि जिनेश्वर की॥

गुरुदत्त प्रभो जिन मूरत को, नमता समता गुण सूरत को।
इस द्रोणिगिरि शुभ पूजन से, अरु दर्शन वंदन अर्चन से॥

सब पाप धुलें सब पुण्य फलें, बसु कर्म कटें शिवधाम मिले।
कर आरतियाँ दिन औ रतियाँ, सुधरें मतियाँ सुधरें गतियाँ॥

अतएव विधान रचा मन से, तन से मन से गुण चिन्तन से।
तन धन्य हुआ मन धन्य हुआ, नर देह मिली भव धन्य हुआ॥

जय हो जय हो जय हो जय हो, जय द्रोणगिरी जय हो जय हो।
जय हो जय हो जय हो जय हो, गुरुदत्त मुनि जय हो जय हो॥

दोहा

जयमाला का अर्घ ले, पूजूँ मन वच काय।
गुरुदत्तादि मुनीश को, द्रोणागिरि पर आय॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो गुरुदत्तादि मुनीन्द्रिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनयांजलि अर्पण करूँ, पुष्पांजलि चढ़ाय।
पूजांजलि के अंत में, दीपावलि मनाय॥

(इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं)

जाप्य

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं अर्हं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः सर्व जगच्छान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी जी की आरती

भक्ति आरती, नृत्य आरती,
सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरी गिरिराज की।
रत्न आरती स्वर्ण आरती,
गुरुदत्त केवली महाराज की॥
सिद्धक्षेत्र की, तीर्थक्षेत्र की।
गुरुदत्त केवली, महाराज की॥ भक्ति...
शांत चित्त ये, गुरुदत्त ये।
घोर उपसर्ग जयी, गुनिराज की॥ भक्ति...
शुक्ल ध्यान से, कम्र हान से।
हुए केवल महान, यतिराज की॥ भक्ति...
योग रोध से, आत्म शोध से।
सिद्ध भगवान हुए ऋषिराज की॥ भक्ति...
आदिनाथ की, पार्श्वनाथ की।
वीर चौबीस जय, जिन राज की॥ भक्ति...